

स्वर्णिम भारत बनाने में मातृशक्ति का अहम् योगदान



ओ.आर.सी.। कार्यक्रम में दीप प्रज्वलन करते हुए ब्र.क.विजय, ब्र.क.गीता, ब्र.क.शक्ता, ब्र.क.अंजली बहादुरगढ़, रुक्मिणी दादी, ब्र.क. आशा निदेशिका, ओ.आर.सी. तथा सभा में सम्मानित राजयोगी मातायें।

ओ.आर.सी.। भगवान जब धरा पर अवतरित होते हैं तो ज्ञान का कलष नारी शक्ति को देते हैं। वह नारी जिसको सभी ने अबला कहा, नर्क का द्वार कहा उस मातृशक्ति के द्वारा ही परमात्मा स्वर्ग के द्वार खोलते हैं, मातृशक्ति ही इस धरा पर स्वर्ग लायेगी। उक्त उद्गार ब्रह्माकमारीज

द्वारा आयोजित नियमित रूप से राजयोग का अभ्यास कर रही बहादुरगढ़ सेवाकेन्द्र की माताओं के सम्मान समारोह में ब्र.कु. आशा,निदेशिका,ओ.आर.सी. ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि नारी शक्ति को परमात्मा ने अपने से भी आगे रखा। जब परमात्मा की वंदना की जाती है तो पहले

त्वमेव माताश्च ही आता है, माता को ही प्रथम गुरु भी कहा जाता है क्योंकि वो ही बच्चे को बोलना सिखाती है। उन्होंने आगे कहा कि जब परमात्मा आते हैं तो उनको विश्व को परिवर्तन करने के लिए विशेष रूप से पवित्रता, दैवीगुण, प्रेम, वात्सल्य जैसे गुणों की आवश्यकता होती है आधार

पर ही स्वर्णिम दुनिया की स्थापना हाती है। इनमें से ज्यादातर गुण तो मातृशक्ति में पहले से ही समाहित हैं। इस कार्यक्रम में 300 माताओं को सम्मानित किया गया। 2000 से भी अधिक सभी के परिजन उपस्थित थे। इस अवसर पर माताओं का श्रृंगार कर बैंड बाजों के साथ शोभायात्रा निकाली गई।

सभी आनंद-विभोर हो रहे थे। साथ ही साथ बहुत ही सुंदर सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया जिसमें नृत्य एवं प्रभु प्रेम के गीतों ने सभी का मन मोह लिया। दादी रुक्मिणी ने भी सभी को अपने आशीर्वाचन दिये। सभी को सम्मान पत्र एवं प्रभुप्यार की सुंदर सौगात भेंट की।

PEACE OF MIND - TV CHANNEL

Cable network service
 "C" Band with Mpeg4 receiver
 Frequency:4054,
 Polarisation:Horizontal, Degree: 83
 Symbol:13230, Satellite:INSAT 4A,
 Peace of Mind: (Vision Shiksha)
DTH Services
 Videocon D2H: Channel no. 497,
 Reliance Big TV: Channel no. 171
Smart Phone Service
 Android | Blackberry | iPhone | iPad |
 Tablet | Visit: <http://pmtv.in>
Mobile Audio Service
 Airtel - 55231 - Rs.2 per day
 Vodafone - 552013 - Rs 1 per day
 Reliance - 56300123 Rs 1 per day
 अगर आप पैसे ऑफ माइंड चैनल वाला
 करवाना चाहते हैं तो अधिक जानकारी के लिए
 सम्पर्क करें - 9441451111, 9404777111

सूचना-ओम शान्ति मीडिया में सेवा के लिए हिन्दी व अंग्रेजी भाषा की जानकारी रखने व पत्रकारिता के अनुभवी भाइयों की आवश्यकता है। ई.मेल, वेबसाइट तथा सॉफ्टवेयर की भी जानकारी हो। ईश्वरीय सेवा के इच्छुक भाई अपना पूरा डाटा इस ईमेल पर भेजें-

Email- mediabkm@gmail.com
M-8107119445

प्रश्न- मैं 20 वर्षीय लड़की हूँ। मैं 5 वर्ष से ज्ञान-योग के मार्ग पर चल रही हूँ परंतु मैं बचपन से ही बहुत चंचल हूँ। अब मैं बड़ी हो गयी हूँ तो मेरी चंचलता मुझे भी अच्छी नहीं लगती और दूसरों को भी। मैं इससे कैसे मुक्त होऊँ?

उत्तर- योगमार्ग पर चलते हुए चंचलता एक बाधा ही बन जाती है। आपका ये संकल्प प्रशंसनीय है कि आपको गंभीर होना है। मनुष्य को इतना गंभीर तो नहीं होना चाहिए कि सब उससे डरने लगे, कोई उसके समीप भी ना आए। परंतु आपको तेज के अनुसार आप इतनी गंभीर नहीं होनी लेकिन आपको याद रहे कि रमणीकता और गंभीरता का बालेस जकर होना चाहिए।

आपने जीवन में पवित्रता अपनाने की प्रतिज्ञा करके एक अच्छा निर्णय लिया है। आप जैसे महान कन्याओं पर तो हमें ही नहीं, स्वयं भगवान को भी गर्व होगा। संसार में जहाँ हमने कन्याएँ बनायां और के मार्ग में दौड़ रही हैं, वहाँ पवित्र जीवन बनाकर संसार में मानवता के अंशमान का सकल्य करना ये आपकी महानता है। भले ही आप छोटी हैं लेकिन आपके विचार महान हैं। ऐसे ही महान विचार यदि हमारे देश को सभी कन्याएँ अपना लें तो भारत विश्व युग बन जाएगा। सब आपकी इतना ही करना है कि आपका को बहुत प्रैक्टिस सारा दिन करें। योगाभ्यास प्रतिदिन 4 घण्टा हो जाए। इसे अपना मूल लक्षण बना लें और 6 मास के लिए अंतर्मुखता की धारणा को ले लें। इससे आपके जीवन में गंभीरता आए योगी और आप इस बात से मुक्त हो जाएंगे। यह बात विशेषकर याद रखना कि 4 घण्टे योगाभ्यास के बिना पवित्रता का पथ कठिन हो जाता है। सेवाओं में रहते, कर्म करते व्यवहार में आते त्यागपन और प्यारपन का स्तवचन रखें।

प्रश्न- मैं तनीषा हूँ। बचपन से ज्ञान में हूँ। मैंने 12 वीं की है और मेडिकल एन्ट्रेंस एग्जाम की तैयारी कर रही हूँ। अचानक पता नहीं मुझे क्या हो गया है कि पढ़ाई में मेरा मन नहीं लगता, न ही किसी पारिवारिक समारोह, पार्टी आदि में जाने की इच्छा होती है। लगता है कि मैं अपना

टाइम वेस्ट कर रही हूँ। न मेरा ज्ञान-योग में मन लगता है और ना ही संसार में मन लगता है। माँ-बाप को च्छा है कि मैं डॉक्टर बनूँ परंतु मैं कम्प्यूटर्ड हूँ कि क्या करूँ- इसके दो ही कारण समझ में आ रहे हैं। या तो आपके शरीर में हार्मोस का परिवर्तन हो रहा है या आपको सूक्ष्म डिप्रेशन प्राप्त हो गया है क्योंकि संसार में डिप्रेशन की बीमारी तीव्र होती जा रही है और अनेक युवक इसके शिकार हो रहे हैं।



जिस मनुष्य के मन में व्यर्थ संकल्प बहुत चलते हैं, उनका मस्तिक धीरे-धीरे कमजोर हो जाता है। फिर उनमें किसी भी बात को सहन करने की शक्ति नहीं रहती और वह सब परिणाम में कोई भी अनचाही घटना हो जाती है तो वे उसे सहन नहीं कर पाते और डिप्रेशन के शिकार हो जाते हैं। आप अपने को कोशिश करके व्यर्थ और निगेटिव संकल्पों से बचाकर रखें। इसके लिए प्रतिदिन सेवाकेन्द्र पर जाकर मुरली सुनना मिस ना करें। उससे आपको रोज नए व सुंदर विचार मिलेंगे और व्यर्थ समाप्त होता जाएगा। साथ-साथ आप कुछ सेवाओं में भी अपने को व्यस्त करे ता कि शारीरिक प्रयत्न भी हो। दो विशेष बात आपको करना है। प्रतिदिन 5 बार चार्ज करके पानी पीना है। इसकी विधि है पानी को दृष्टि देकर 7 बार संकल्प करें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान् हूँ फिर पानी पिये। इससे आपके शरीर में हार्मोस का असंतुलन ठीक हो जाएगा। दूसरी बात रात को सोने से पहले 108 बार लिखें कि मैं एक महान आत्मा हूँ। इससे आपके मस्तिका को थोरे थोरे थोरे जागरी और डिप्रेशन ठीक हो जाएगा। ये दोनो कार्य 3

मास तक करें तो सब ठीक हो जाएगा।

प्रश्न - मैं उड़ीसा से प्रमोद कुमार अपना प्रश्न आपसे करना चाहता हूँ। मैं रेलवे में नौकरी के लिये परीक्षा देने वाला हूँ। अब तक मैंने जितनी भी परीक्षाएँ दी हैं, उन्में मुझे कहीं भी सफलता नहीं मिली है। अब भी मेरे मन में डर है कि पता नहीं मुझे सफलता मिलेगी या नहीं। परंतु मैं इस परीक्षा में सफल होना चाहता हूँ क्योंकि मेरा भविष्य इसी पर आधारित है। क्या करूँ?

उत्तर- निश्चित रूप से इन परीक्षाओं में सफल होने से मनुष्य का आत्मविश्वास बढ़ता है और बार-बार की असफलता मनुष्य को तोड़ देती है लेकिन आप खराबे नहीं। आप तो भगवान के बच्चे हैं। आप को आपको अवश्य साथ देंगे। अपना ये संकल्प और समस्या रोज बाबा को अर्पित कर देना कि इस परीक्षा में आपको मुझे सफल करना ही है। आप तो मेरे परमपिता हैं। सच्चा पिता होकर भी आप मेरी मदद नहीं करेंगे तो और कौन करेगा। ऐसे अधिकांश से उनसे बातें करना। इसके बाद 7 बार संकल्प करना मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, सफलतामूर्त हूँ। इस बार मुझे सफलता मिलेगी ही। आप अपनी सफलता का अभी से आनंद लेना शुरू करें। ऐसा फील करें कि आप इन परीक्षा में पास हो गए हैं। आपका सलेक्शन हो गया है और आपके हाथ में ज्वाइनिंग लेटर आ गया है। इसके साथ-साथ 21 दिन के योग का प्रयोग प्रारंभ करें। इसमें प्रतिदिन एक घण्टा पांचकुल राजयोग मेडिटेशन करें और उस मेडिटेशन से पहले मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और सफलतामूर्त हूँ, ये दोनों संकल्प 7 बार करें। हमें पूर्ण विश्वास है कि इस बार सफलता आपका चरण चुमेगी और आपका भविष्य उज्ज्वल होगा।

प्रश्न- मैं एक कुमार हूँ। पिछले कुछ समय से विद्यालय से जुड़ा हुआ हूँ। मुझे व्यर्थ संकल्प बहुत चलते हैं। योगाभ्यास में भी मेरी एकाग्रता नहीं होती। मैं सेवाकेन्द्र पर तो रोज जाता हूँ लेकिन अभी तक मुझे संतुष्टि नहीं मिली है। मैं क्या करूँ ताकि मेरा योगाभ्यास भी सफल हो और मन के

व्यर्थ संकल्प भी समाप्त हों?

उत्तर- आज समाज में हमारे चारों ओर के वायव्येशवास अति दूषित और तामसिक हैं। उसका प्रभाव उन युवाओं पर ज्यादा पड़ता है जो अपनी वासनाओं के वश हो जाते हैं। इसलिए यथेष्ट आप अपने चारों ओर शक्तिशाली प्रभामण्डल तैयार करें तो आपके व्यर्थ संकल्प समाप्त होने लगेंगे और इसकी विधि है रोज सवेरे उठकर और सोने से पहले 21-21 बार याद करना मैं मास्टर सर्वशक्तिवान् तो हैं तो कलयुग का प्रभाव आप नहीं पड़ेगा। आप सेवाकेन्द्र पर तो रोज जाते ही हैं, परंतु अपने घर में एक अव्यक्त मुरली का अध्ययन करें और उसके मुख्य चाईस्टोन को रोज यदि दिन में 3 बार 10-15 मिनट ऐसी स्टाडी करेंगे तो आपके मन को नु संदूर विचार मिलते रहेंगे और व्यर्थ विचार समाप्त होकर रहेंगे। प्रतिदिन 15 मिनट आपको एकांत के लिए भी निकालना है और उसमें विशेष रूप से स्वमान का अभ्यास करना है। स्वमान से विचार महान होने लगते हैं और व्यर्थ का प्रकोप ढीला पड़ने लगता है। फिर भी यदि बीच-बीच में व्यर्थ संकल्प आको सतायें तो आप घबराना नहीं अपने आत्मविश्वास को खोना देना। क्योंकि व्यर्थ से पूरी तरह मुक्त होने में काफी समय लगता है। बस आपको तो ये देखना है कि आपकी विजय हो रही हो। योग की सफलता से भी आपके व्यर्थ संकल्प समाप्त होने लगेंगे क्योंकि योगाभ्यास में हम मन-बुद्धि को परमात्मा पर स्थिर करते हैं और उससे हमें जो अनुभूति मिलता है, उससे चित्त शांत होने लगता है इसलिए प्रतिदिन एक बार अशरीरी होने का अभ्यास, आत्मिक दृष्टि का अभ्यास और परमात्मा के स्वरूप पर अपनी दृष्टि को स्थिर करने का अभ्यास करना। चाहे आप 10 सेकण्ड ही स्थिर कर पाओ लेकिन करना अवश्य इससे आपकी एकाग्रता बढ़ने लगेंगी, योग के सबबेज्ज में आप सफल होने लगेंगे और व्यर्थ से भी मुक्त होने लगेंगे, परंतु यह नहीं भूलना कि बारंबार का अभ्यास ही इस मार्ग पर सफलता की सीढ़ी है।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

